11

मसीह में नया जीवन, 1

कुलुस्सियों 3:14

स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहना (3:1-4)

[1]अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। [2]पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। [3]क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। [4]जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रकट किए जाओगे।

''अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए'' (3:1)

कलीसियाओं के नाम अपने अधिकतर पत्रों की तरह पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्री में पहले आधार बनाया और फिर उस जीवन के किस्म का वर्णन किया, जो शिक्षा की बातों पर आधारित होनी चाहिए। **अतः** शब्द संकेत देता है कि पौलुस 3:1 में इसी ढांचे का इस्तेमाल कर रहा था।[1]

कुलुस्सियों 3:1-4 पौलुस के पत्र के पहले भाग (1:12—2:23) और उसके पत्र के मुख्य भाग के अन्तिम भाग (3:5—4:6) के बीच परिवर्तन का काम करता है। फिलॉस्फी और झूठी शिक्षा की अपनी चर्चा उसने 2:8-23 में पूरी की और फिर मसीह में नये जीवन के बढ़ने और विशेषताओं की चर्चा आरम्भ की। 2:20-23 में यह समझाने के बाद कि कुलुस्सियों को फिलॉस्फी और संसार की आदि शिक्षा को क्यों नहीं मानना चाहिए। उसने 3:1-14 में वे सकारात्मक और नकारात्मक कारण बताए जो कि मसीही लोगों को क्यों मानने चाहिए और क्यों नहीं।

''अतः'' लिखते हुए एक भाग का आरम्भ करके पौलुस पहले कही गई किसी बात को दोहरा रहा था। कुलुस्से के मसीही लोग बपतिस्मे में मसीह के साथ मर गए थे (2:20) और उसके साथ जी उठे थे (2:12, 13)। बपतिस्मा लेकर वे यीशु की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने में सहभागी हो गए थे, जिसके द्वारा उन्हें आत्मिक रूप में जीवित किया गया था। उस परिवर्तन की चर्चा करने के लिए जो मसीह के साथ इस अनुभव के बाद होना चाहिए था, पौलुस इस विचार की ओर लौट आया।

2:20 की तरह आयत 1 में **जब** के साथ बताई गई सशर्त बात का अर्थ यह संदेह नहीं है कि कुलुस्से के लोग मसीह के साथ जिलाए गए थे, बल्कि यह उनके लिए नये जीवन के साथ जो मसीह बपतिस्मे में मसीह के साथ उनके जी उठने से आरम्भ हुआ था, चलने के लिए पौलुस को उनकी चुनौती का आधार देता है। ''जब'' के लिए शब्द का अनुवाद ''क्योंकि'' हो

सकता है। यह दावा करने के बाद फिर पौलुस ने उन्हें ऊपर बताई गई बातों की खोज में रहने की आज्ञा दी। उसके साथ नये जीवन में प्रवेश करने के बाद उन्हें ''स्वर्गीय वस्तुओं'' के लिए जीना आवश्यक था।

मसीह के साथ जिलाए जाने से पहले इन लोगों को उसके साथ दफ़नाया गया था। जिसके लिए वे पाप के लिए (रोमियों 6:1-6; ''उसके साथ'' के सम्बन्ध में 3:3, 4 देखें) मर गए होने चाहिए थे। और संसार द्वारा बनाए गए नियमों से पौलुस ने दो पक्की बातें बताईं कि वे मसीह के साथ मर गए थे और मसीह के साथ उन्हें जिलाया गया था (कुलुस्सियों 2:12, 20)। उसके साथ मरकर वे सांसारिक समझ और जीवन के सांसारिक ढंगों से कट गए थे।

उनका नया केन्द्र बिन्दु मसीह था और उन्हें स्वर्ग की वास्तविकताओं की खोज करनी थी जहां वह है। उनका ध्यान संसार के नियमों की ओर नीचे को नहीं, बल्कि मसीह और उसकी आज्ञाओं की ओर ऊपर को होना आवश्यक था। उनके मनों की दिशा का बदलना अपने आप नहीं होना था बल्कि उन्हें अपनी ओर से प्रयास करना आवश्यक था। उनकी सोच नई रुचि से चलनी आवश्यक थी।

बपतिस्मे के समय होने वाले परिवर्तन का वर्णन जे. बी. लाइटफुट द्वारा किया गया है:

> बपतिस्मे में होने वाला परिवर्तन यदि सचमुच में हो जाए तो इससे व्यक्ति के पूरे स्वभाव में आना आवश्यक है। यह न केवल उसके व्यवहारिक आचरण को, बल्कि उसकी बौद्धिक अवधारणाओं को प्रभावित करता है। यह एक नये अस्तित्व में निकालने से कम नहीं है। उसे पृथ्वी से स्वर्ग में बदल दिया जाता है; और इस बदलाव से उसकी सोच बदल जाती है, न्याय का उसका मानक पूरी तरह से बदल जाता है। अब उसके लिए बड़ा शत्रु तत्व नहीं है; इसके प्रति उसकी स्थिति पूर्ण रूप में तटस्थ है। तपस्या के नियमों, कर्मकांडों के नियमों का चाहे जितना भी प्रभाव क्यों न हो परन्तु उसके लिए किसी काम का नहीं रहता। ये सब बातें पृथ्वी की यानी सांसारिक हैं। भौतिक, अस्थाई, सांसारिक ने नैतिक, अनन्त और स्वर्गीय को स्थान दे दिया है।[2]

''जिलाए गए'' के लिए यूनानी शब्द *sunegeirō* वही शब्द है जो 2:12 में मिलता है, जहां इसका अनुवाद ''जी भी उठे'' हुआ है। काल से कार्य के पूरा होने का संकेत मिलता है। ''यूनानी में सशर्त वाक्यांश का रूप (*ei*) संकेत देता है कि शर्त पूरी कर दी गई है।''[3] कुलुस्सियों को ''मसीह के साथ'' जिलाया गया था, इस कारण उन्हें अपने मनों को उस पर लगाते और उसके साथ सहभागिता को बढ़ाते हुए अपनी सोच को नई दिशा देनी आवश्यक थी।

भाइयों को अब संसार की बातों की खोज करने की आवश्यकता नहीं थी (2:20)। अब उन्हें स्वर्ग की मूल्यवान वस्तुओं की खोज करनी आवश्यक थी (3:1)। उन्हें ''शारीरिक लालसाओं'' (2:23) की समस्या से इससे दूर रहकर और अपना ध्यान यीशु पर लगाकर निपटना चाहिए (इब्रानियों 12:1, 2)। उन्हें जीवन का एक नया विचार जो महिमा प्राप्त मसीह को उसके स्वभाव को अपनाने के लिए समर्पित हो, बढ़ाना आवश्यक है।

''स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह विद्यमान है
और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है'' (3:1)

यीशु के साथ जिलाए जाने के कारण कुलुस्सियों को अपने मनों को आत्मिक बातों की ओर मोड़ना आवश्यक था। *zēteite* जिसका अनुवाद **खोज में रहो** हुआ है, किए जाते रहने वाले कार्य की आज्ञा को दिखाता है। इसका अर्थ पाने के लिए तलाश करते रहना, ढूंढ़ते रहना, प्रयास करते रहना है। पौलुस के पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं को न केवल स्वर्गीय स्वभाव को पाने की बल्कि उसे प्राप्त करने की भी आवश्यकता थी। इसी प्रकार से उन्हें विश्वास में बने रहने की आवश्यकता थी (1:23), उन्हें स्वर्गीय बातों की खोज में रहना आवश्यक था।

anō शब्द जिसका अनुवाद ''स्वर्गीय'' हुआ है उसका अनुवाद यूहन्ना 8:23, गलातियों 4:26 और फिलिप्पियों 3:14 में इसी प्रकार से हुआ है। **स्वर्गीय वस्तुओं** वाक्यांश और कहीं नहीं मिलता है। अपने नये सम्बन्ध को सही ढंग से देखने के लिए कुलुस्सियों को अपनी नज़रें इस जीवन की गंदगी और मैलेपन से हटाना और नये जीवन का सक्रियता से पीछा करना आवश्यक था। इसका अर्थ यह नहीं है कि नये मसीही होने के नाते उन्हें सांसारिक ज़िम्मेदारियों से अपनी आंखें बंद करके केवल आत्मिक बातों से ही विचार करना था बल्कि इसका अर्थ यह है कि उन्हें नये जीवन को ईश्वरीय दृष्टिकोण से देखना था।

मसीही लोगों के रूप में हमें अपनी प्राथमिकताओं को संतुलित करना चाहिए। हम सांसारिक मामलों में इतना न उलझ जाएं कि हम स्वर्गीय बातों की खोज न कर सकें और हम स्वर्ग जाने में इतना व्यस्त हो जाएं कि हम अपनी सांसारिक ज़िम्मेदारियों को सही ढंग से न निभा पाएं। सही संतुलन अपनी सांसारिक ज़िम्मेदारियों को अपने ईश्वरीय लक्ष्यों से मिलाने से पाया जाता है।

हम शारीरिक रूप में यीशु को देख नहीं सकते हैं, परन्तु हम एहसास कर सकते हैं कि हमें परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊपर उठाया गया है। स्वर्गीय स्थिति में यीशु के गिरने केवल शुद्ध और पवित्र चीज़ें ही हैं। उसके अनुयायियों के रूप में हमें अपने आपको उसके साथ और उस पवित्रता से मेल खाते के रूप में देखना चाहिए, जो अब उसके आसपास पाई जाती है।

पौलुस के कुलुस्सियों के लिए लिखने के समय यीशु स्वर्ग में था, जो कि पृथ्वी पर आने से पहले उसका निवास स्थान था। वह अपने जी उठने के चालीस दिन बाद (प्रेरितों 1:3, 9–11), परमेश्वर के दाहिने हाथ अर्थात आदर की सबसे ऊंची जगह पर शासन करने के लिए पृथ्वी से स्वर्ग में उठा लिया गया। किसी और व्यक्ति को अधिकार की ऐसी स्थिति नहीं दी गई है चाहे वे स्वर्गदूत ही क्यों न हों (इब्रानियों 1:13)। दाऊद ने परमेश्वर के दाहिने हाथ यीशु के राज्य अभिषेक की भविष्यवाणी की (भजनसंहिता 110:1) और यीशु ने इस वचन को अपने ऊपर लागू किया (मत्ती 22:44; 26:64; मरकुस 12:36; लूका 20:41–44)। उसके जी उठने के बाद उसके परमेश्वर के दाहिने हाथ होने की बात एक प्रामाणिक तथ्य के रूप में बताई जाती है।[4]

जी उठने, ऊपर उठाए जाने और परमेश्वर के दाहिने हाथ बिठाए जाने पर सब कुछ यीशु के पांव के तले कर दिया गया (इफिसियों 1:20–22), और ''स्वर्गदूतों और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं'' (1 पतरस 3:22)। उसका राज्य (कुलुस्सियों 1:13) और शासन तभी से अस्तित्व में है। अब वह सिवाय पिता के हर किसी व्यक्ति और वस्तु पर शासन और राज करता है। वह अपने वापस आने तक राज करता रहेगा, जब वह राज्य को पिता के हाथ

सौंप देगा (मत्ती 13:41-44; 1 कुरिन्थियों 15:23-28)। उसके वापस आने पर उद्धार पाए हुए लोग, जिन्हें जिलाया जाएगा और जो जीवित हैं सभी स्वर्ग में उसके साथ मिलने के लिए हवा में उठा लिए जाएंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17)।

''पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ'' (3:2)

कुलुस्सियों को शुद्ध वातावरण पर, जहां यीशु रहता है ध्यान लगाना था। उन्हें यह निर्णय लेना था कि वे सांसारिक बातों पर ध्यान लगाएंगे या स्वर्गीय बातों पर। पौलुस उस स्थिति की बात उतनी नहीं कर रहा था जितनी उन स्थानों में रहने वाले लोगों के जीवन के ढंग की। अन्तर **पृथ्वी पर की** अस्थाई, तुच्छ और पापपूर्ण **वस्तुओं** और **स्वर्गीय** पवित्र, सदा रहने वाली और अनन्तकालिक बातों में है। **ध्यान लगाओ** यूनानी अवश्यमाननीय शब्द *phroneite* का अनुवाद है। इस और अन्य संदर्भों में (रोमियों 12:16; फिलिपियों 3:19) इसका अर्थ ''किसी बात पर ध्यान से विचार करना, अपना मन लगाना, इरादा करना'' है।[5]

KJV का अनुवाद ''अपना ध्यान लगाओ'' भावनाओं पर अत्यधिक ज़ोर देता है। पौलुस को कुलुस्सियों की सोच की चिंता थी। उन्हें स्वर्ग जाने की खोज करने के लिए अधिक करना आवश्यक था; स्वर्ग का ईश्वरीय स्वभाव उनके विचारों का केन्द्र होना आवश्यक था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कुलुस्सियों को इस बात की समझ थी कि ''स्वर्गीय वस्तुओं'' भौतिक संसार को नहीं कहा जा रहा था, उसने इसे ''जहां मसीह विद्यमान है'' के साथ पूरा किया (3:1)।

''पृथ्वी'' वह कार्य क्षेत्र है, जहां पाप का राज है, जबकि ''स्वर्गीय वस्तुएं'' वहां पाई जाती हैं, जहां पवित्रता श्रेष्ठ है। मसीही लोगों के रूप में हमारा जीवन हमारे ध्यान के केन्द्र पर तय होता है। यदि हम संसार की बातों पर ध्यान लगाते हैं तो हम सांसारिक सोच वाले लोग होंगे और हमारा जीवन संसार के लोगों के जैसा होगा। यदि हम अपना मन स्वर्गीय बातों पर लगाते हैं तो हम ईश्वरीय स्वभाव को अपना लेंगे और इस जीवन की तुच्छ बातें हमारे ऊपर नियन्त्रण नहीं रख पाएंगी। कुलुस्से के लोगों की तरह हमारा दायित्व इस जीवन की अनात्मिक और लुभाने वाली बातों को निकालने का यत्न करते हुए अपना ध्यान उन बातों पर लगाकर जो आत्मिक हों, अपने मनों को वश में रखना है।

हमारी सोच में से पापपूर्ण कार्य चाहे निकल जाने आवश्यक हैं, परन्तु इतना ही काफ़ी नहीं है। ऐसा मन जो बुराइयों से मुक्त है, आवश्यक नहीं कि वह गुणों से भरा हुआ हो। आत्मिक सोच और जीवन के द्वारा नकारात्मक व्यवहारों को निकाला जा सकता है। बुराई को निकालने का ढंग उस पर विचार करना है, जो भला है। रोमियों 12:21; 13:14; 2 कुरिन्थियों 3:18; और गलातियों 5:16 में पौलुस ने यह नियम बताया है।

फिलिप्पियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने ध्यान दिलाया कि जिनका मन पृथ्वी की बातों पर लगा हुआ है, वे क्रूस के शत्रु हैं (फिलिप्पियों 3:18, 19)। उसी पत्र में उसने उन सकारात्मक विषयों की एक सूची दी जिस पर उनके मन लगे होने आवश्यक थे (फिलिप्पियों 4:8)। याकूब ने उन कामों के विपरीत जो ऊपर के हैं, कई सांसारिक और शैतानी कामों की सूची दी है (याकूब 3:14-18)।

''क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन
मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'' (3:3)

कुलुस्से के लोग मरे हुए होने के साथ-साथ जीवित भी थे (2:13, 20)। वे **मर गए** (*apothnēskō*) थे। यह क्रिया शब्द पूर्ण हो गए और पूर्ण और निश्चित क्रिया को दिखाता है, परन्तु शायद इन में से कुछ भाइयों को यह समझने में कठिनाई थी कि वे आत्मिक रूप में कैसे मर गए थे। पौलुस ने उनके दिमाग में डालने और उनकी मृत्यु के परिणामों पर ज़ोर देने के लिए इस अवधारणा को दोहराया। एक वचन के साथ बहुवचन का इस्तेमाल (''तुम्हारे जीवनों'' के बजाय ''तुम्हारा [बहुवचन] जीवन'') यूनानी उपयोग में आम बात थी।[6] इन मसीही लोगों को मसीह में नया जीवन मिल गया था।

जीने के अपने पुराने ढंगों के दुष्ट कामों से आत्मिक रूप में मर जाने के बावजूद जिन्होंने उन्हें मसीह से अलग किया हुआ था (1:21), कुलुस्से के लोग मसीह के लहू के द्वारा मिलाए जाने से उसके साथ अपने नये सम्बन्ध में जीवित थे। विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है, ''ऊपर बताए गए अर्थ में'' (2:11, 12 पर देखें) कुलुस्से के लोग मर गए और दफ़न किए गए थे। अब वे जीवित नहीं थे परन्तु मसीह उन में जीवित है। वे अपने पुराने मनुष्यत्व और उस संसार के लिए जिस पर पाप का वश है, मर गए हैं।[7]

वे बपतिस्मे के कार्य में मर गए थे। इस सच्चाई का संकेत 2:12 में मिलता है और रोमियों 6 में स्पष्ट बताया गया है। पौलुस ने पूछा, ''हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएं?'' (आयत 2)। उसने उत्तर दिया, ''अतः उस मृत्यु को बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए'' (आयत 4)। कुलुस्से के मसीही लोग अब जैसा वह पहले थे, अपने पुराने जीवनों की सांसारिक बातों से मर गए थे। बपतिस्मा लेने से पहले जीने के अपने ढंग के सम्बन्ध में परमेश्वर के लिए मरे हुए थे। अब यीशु की मृत्यु के साथ अपनी पहचान के कारण वे अपने अतीत से मर गए थे। नये क्षेत्र, जिसमें मसीह के साथ सहभागिता में उन्होंने परमेश्वर में प्रवेश किया था, इस जीवन के बुरे तूफ़ानों से उन्हें आश्रय दिया था।

छिपा हुआ (*kruptō*) पूर्ण हुई क्रिया का संकेत है जिसका जारी रहने वाला परिणाम है। उनके जीवन **मसीह के साथ परमेश्वर** में छिपे हुए थे और *छिपे रहे।* वे ''मसीह के साथ परमेश्वर में'' थे क्योंकि वे मसीह में थे (2 कुरिन्थियों 5:17) और वह परमेश्वर में है (यूहन्ना 10:38; 14:10, 11, 20; 17:21)। एक अर्थ में संसार ने उन्हें नहीं देखा, क्योंकि उन्होंने मसीह को पहना हुआ था (गलातियों 3:27)। यह तथ्य कि वे ''छिपे हुए'' थे, का अर्थ यह कि संसार उन्हें देख नहीं सकता था, क्योंकि संसार ने मसीह को देखा था, जिसे उन्होंने पहना हुआ था।

ये मसीही लोग ''जगत की ज्योति'' थे। ''जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है, वह छिप नहीं सकता'' (मत्ती 5:14)। यदि वे पूरी तरह से संसार से छिपे हुए थे तो वे जगत की ज्योति नहीं हो सकते थे। संसार के लिए उन्हें पर्व के वस्त्र, मसीह को पहने हुए देखना आवश्यक था (मत्ती 22:11, 12; गलातियों 3:27)। वह ज्योति है (यूहन्ना 8:12), जिसमें उन्हें ढांपा गया था। अब वे अंधकार नहीं थे, बल्कि जगत की ज्योतियों के रूप में चमकते हुए (फिलिप्पियों 2:15) वे प्रभु में ज्योति थे (इफिसियों 5:8)।

''मसीह के साथ परमेश्वर में'' छिपा होने के कारण वे संसार की प्रलोभक बातों से छिपकर

परमेश्वर की रक्षात्मक सम्भाल में थे (1 कुरिन्थियों 10:13)। पुराना नियम परमेश्वर के छिपने के स्थान (भजन संहिता 17:8; 31:20; 64:2), अपने लोगों के लिए आश्रय (भजन संहिता 61:2, 3) के विचार को दिखाता है। आश्रय के इस सुरक्षित स्थान पर वे पाप की तूफ़ानी हवाओं और सांसारिक खतरे से दूर सुरक्षित रहे थे। वे अपने रक्षक मसीह के साथ थे और अपने आश्रय परमेश्वर में थे।

जब तक कुलुस्से के लोग अपने छिपने के स्थान में सुरक्षित रह रहे थे तब तक शैतान की दुष्ट सेनाएं उन पर कब्जा करके उन्हें बंदी नहीं बना सकती थीं (1 यूहन्ना 3:6, 9; 1 पतरस 1:23 से तुलना करें)। यीशु ने बुरी शक्तियों पर जय पा ली थी (कुलुस्सियों 2:15), इस कारण वह उन्हें जय पाने में सहायता कर सकता था (1 यूहन्ना 4:4)। यदि वे सुरक्षित ढंग से विजेता के साथ रहते तो उन्होंने विजयी होना था। उन्हें किसी ने अपने छिपने के स्थान यीशु से दूर करके उन्हें बंदी नहीं बना पाना था (कुलुस्सियों 2:8)।

पौलुस ने "मसीह के साथ" (*sun Christō*) का इस्तेमाल इस अर्थ में केवल यहां किया। अधिकतर उसने "मसीह के साथ" के बजाय "मसीह में" लिखा है। वह आत्मिक क्षेत्र, जिसमें बपतिस्मे के समय मसीही लोग प्रवेश करते हैं "मसीह में" होना आवश्यक है। "परमेश्वर में" होने की यही स्थिति बताना कोई समस्या वाली बात नहीं है क्योंकि मसीह "परमेश्वर में" है (यूहन्ना 10:38; 14:11, 20; 17:21); जो लोग "मसीह में" हैं आत्मिक अर्थ में वे परमेश्वर में भी हैं।

"जब मसीह, जो हमारा जीवन है" (3:4)

3:1-4 में पौलुस ने सर्वनाम का इस्तेमाल करने के बजाय **मसीह** शीर्षक का इस्तेमाल चार बार किया। यह असामान्य दोहराव ध्यान देने वाला है। कुलुस्से के लोगों के जीवन मसीह के साथ छिपे हुए थे। इस कारण पौलुस ने कहा कि महिमामय उसके प्रकट होने पर वे उसके साथ होंगे (आयत 4)। जो लोग अब मसीह के साथ हैं (आयत 4) उन्हें उसके वापस आने के समय उसके साथ होने के लिए लाया जाएगा (आयत 4)। इस बीत रहे संसार के खत्म होने पर उन्हें यीशु के आने पर उसके साथ महिमा दी जाएगी। कुलुस्सियों में यीशु के द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में एकमात्र हवाला आयत 4 का है।

कुलुस्से के लोगों के जीवनों का मसीह के साथ छिपे होने का एक और कारण यह है कि वह **हमारा जीवन है** अर्थात जीवन का स्रोत, केन्द्र और चश्मा है (1 यूहन्ना 5:12)।[8] न केवल जीवन उससे मिलता है और उसके साथ मिलता है बल्कि वह मसीही व्यक्ति के लिए जीवन *है।* यीशु दाखलता है और मसीही लोग उसकी डालियां हैं (यूहन्ना 15:5)। डालियों में जीवन दाखलता के साथ उनके सम्बन्ध के कारण है। हर डाली, जो यीशु में बनी नहीं रहती उसे काट डाला जाएगा और वह सूख जाएगी। फिर क्योंकि उसमें जीवन नहीं है, उसे आग में डाल दिया जाएगा (यूहन्ना 15:6)।

यूनानी शब्द जो "जीवन" में सुधार लाता है "हमारा" या "तुम्हारा" हो सकता है। "हमारा," *hēmon* वचन में या मार्ज़न नोट्स में इन अनुवादों में पाया जाता है: KJV; ASV; RSV; NASV; NEB; NKJV; और NRSV. *Humōn* ("तुम्हारा") हस्तलिपियों

की प्रभावशाली संख्या में दिया गया है। इसमें यूनानी नये नियम के पाठ को लिया गया है। ''तुम्हारा'' शब्द ASV के मार्ज़न नोट में होने के साथ-साथ NIV; NRSV और NTV में मिलता है। पवित्र शास्त्र का प्रमाण यह सुनिश्चित करना असम्भव बना देता है कि कौन सा शब्द ''हमारा'' मूल है या ''तुम्हारा।'' अन्त में अन्तर छोटा-सा है। यदि पौलुस ने ''हमारा'' शब्द का इस्तेमाल किया तो वह उन लोगों के बीच अपने आपको मिला रहा था, जिनका जीवन मसीह है। 2:13 और गलातियों 3:25, 26 में उसने ''तुम्हें'' से ''हम'' में अवस्था परिवर्तन का इस्तेमाल किया, जो इस बात का संकेत है कि पौलुस के लिए यह असामान्य बात नहीं।

''प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रकट किए जाओगे'' (3:4)

पौलुस ने कुलुस्से के मसीही लोगों को बताया कि जब मसीह **प्रकट होगा** तो उन्हें भी महिमा में उसके साथ प्रकट किया जाएगा। यूनानी शब्द *phaneroō* का इस्तेमाल यीशु के द्वितीय आगमन (1 पतरस 5:4; 1 यूहन्ना 2:28; 3:2), दर्शन देने (मरकुस 16:12, 14), और उसके प्रकट होने के लिए, जो अज्ञात था या जिसे प्रकट किया जाना चाहिए (मरकुस 4:22; यूहन्ना 1:31) किया गया है। इसका इस्तेमाल उसके सम्बन्ध में भी किया जाता है, जो युगों से परमेश्वर में छिपा हुआ था परन्तु नये नियमों के समयों में उसे प्रकट कर दिया गया (कुलुस्सियों 1:26)।

पौलुस द्वारा **उसके साथ** शब्द का इस्तेमाल यीशु के साथ वर्तमान और भावी संगति के लिए भी किया गया है। यीशु के साथ मसीही व्यक्ति का वर्तमान जीवन स्वर्गीय क्षेत्र में बना रहता है (फिलिप्पियों 1:23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। पौलुस ने लिखा कि मसीही लोग ''और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जबकि हम उसके साथ दुख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं'' (रोमियों 8:17)। ''के साथ'' (*sun*) का इस्तेमाल मसीह के साथ होने के सम्बन्ध में मिश्रित क्रिया में करने पर, बपतिस्मे के द्वारा नये जीवन में साझी होने का अर्थ होता है (रोमियों 6:4, 5; कुलुस्सियों 2:12, 13; 3:1)।

कुलुस्से के लोग यीशु के साथ इन बातों में साझी थे या उन्होंने साझी होना था।

- उन्हें उसके साथ दफ़नाया गया, जिलाया गया और जीवित किया गया था (2:12, 13; 3:1)।
- वे उसके साथ संसार की आदि शिक्षा से मर गए थे (2:20)।
- जिस कारण अब वे उसके साथ परमेश्वर में छिपे हुए थे (3:3)।
- उन्होंने महिमा में उसके साथ प्रकट होना था (3:4)।

रोमियों में पौलुस ने विचार की इसी धारा का इस्तेमाल किया। वे मसीही लोग बपतिस्मे में उसके साथ दफ़नाए गए, उसकी मृत्यु में उसके साथ एक किए गए और उन्हें उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था। इस प्रकार से उसके साथ मरने के कारण उन्हें उसके साथ जीने की आशा थी (6:4-8)।

''उसके साथ'' का अर्थ वही है, जो पौलुस ने और एक जगह देना चाहा: ''जिस ने प्रभु

यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने साम्हने उपस्थित करेगा'' (2 कुरिन्थियों 4:14; देखें रोमियों 8:32)। परमेश्वर यीशु के साथ जिसे उसने जिलाया, हमें भी जिलाएगा। 1 थिस्सलुनीकियों 4:14 में पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा।'' जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने इस आयत पर टिप्पणी की है:

> यहां पर ''उसके साथ'' का अर्थ यह नहीं है कि यीशु देह रहित आत्माओं को *स्वर्ग* से पुनरुत्थान के लिए लाएगा। परन्तु यह है कि परमेश्वर जिसने यीशु को कब्र में से निकाला, उन्हें भी यीशु के साथ *कब्र* से निकालेगा, जो इस में आत्मिक रूप में अपने जीवनों से यीशु के साथ एक होकर गए हैं।[9]

कब्र के सब लोगों को चाहे वे भले हों या बुरे, एक ही समय में जिलाया जाएगा (यूहन्ना 5:28)। यह अन्तिम दिन होगा (यूहन्ना 6:39, 40, 44, 54), जब सबका न्याय किया जाएगा (यूहन्ना 12:48)।[10] जब तक सूर्य चमकता है और पृथ्वी सूर्य के गिर्द और अपनी दुरी पर घूमती है, दिन और रात होते रहेंगे। जब यीशु वापस आएगा तो संसार जाता रहेगा और दिन भी नहीं रहेंगे। पुनरुत्थान संसार के अस्तित्व के ''अन्तिम दिन'' में होगा। मरे हुओं को न्याय के लिए जिलाए जाने के बाद, आकाश और पृथ्वी जाते रहेंगे (2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 20:11)।

कुलुस्से के लोग यीशु की वापसी पर **उसके साथ** जिलाए जाने और **महिमा** में साझी होने की राह देख सकते हैं। यूहन्ना ने लिखा है, ''अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे'' (1 यूहन्ना 3:2)। पौलुस ने लिखा कि यीशु ''हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा'' (फिलिप्पियों 3:21)।

मृत्यु के बाद देह पृथ्वी पर रहती है और प्राण देह को त्यागकर अधोलोक में चला जाता है (उत्पत्ति 35:18; प्रेरितों 2:27, 31)। यीशु के दोबारा आने पर वह उन सब देहों को जिला देगा जो मर गई हैं (यूहन्ना 5:28, 29) और बदली हुई देहों को उनके प्राणों के साथ एक कर देगा, जिन्हें उस समय अधोलोक छोड़ देगा (प्रकाशितवाक्य 20:11-13)। फिर यीशु अपने सिंहासन पर बैठेगा और वर्तमान संसार का अन्त हो जाएगा (2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 20:11)। इसके बाद सारी मनुष्यजाति का न्याय होगा, जिन्हें जिलाया गया था उनका भी और जो अभी जीवित हैं उनका भी।[11] फिर यीशु राज्य को पिता को लौटा देगा (1 कुरिन्थियों 15:24-27)।

''तुम ... उसके साथ महिमा सहित प्रकट किए जाओगे'' वाक्य से कुलुस्से के लोगों को पक्का आश्वासन मिल जाना चाहिए था कि मसीह में नया जीवन जीने के उनके प्रयासों को उसके साथ महिमा पाने का पुरस्कार मिलना था। महिमा पाने का यह आश्वासन उनके जीवन के आत्मिक तूफ़ानों से यीशु के साथ छिपे होने पर आधारित था। वे पृथ्वी पर विदेशी थे परन्तु अपने आत्मिक स्वदेश में उन्होंने स्वर्ग में यीशु के साथ होना था, वह स्थान जहां के वे नागरिक थे (फिलिप्पियों 3:20)। उनकी देहों को यीशु की महिमा प्राप्त देह में बदला जाना था। उन्होंने नाशवान और सांसारिक देहों से मुक्त हो जाना था और उन्हें अविनाशी आत्मिक देहें दी जानी थीं (देखें 1 कुरिन्थियों 15:42, 43; 2 कुरिन्थियों 5:1, 2)।

प्रासंगिकता

मसीह के साथ जिलाए गए लोगों को नई दिशा मिली है (3:1, 2)

कुलुस्से के लोगों को बपतिस्मे में मसीह के साथ जिलाया गया था (आयत 1; 2:12)। परन्तु उसके साथ जिलाए जाने से त्वरित सिद्धता नहीं थी। मसीही स्वभाव को बढ़ाने का धीरज से किया जाने वाला प्रयास आवश्यक है। इसमें जीवन के लिए यीशु के स्वर्गीय ढंग पर ध्यान लगाना शामिल है। नवजात मसीही उन बच्चों की तरह होते हैं, जिनका नया जीवन बपतिस्मे के समय आत्मिक जन्म से आरम्भ होता है (यूहन्ना 3:3-5)। उन्हें आत्मिक रूप में बढ़ने के लिए परमेश्वर के वचन के दूध की आवश्यकता होती है (1 पतरस 2:2)।

मसीही लोगों को उस क्षेत्र पर फोकस करना आवश्यक है जहां मसीह का निवास है (आयतें 1, 2)। हमारा जनुन परमेश्वर की बातों के लिए होना आवश्यक है न कि संसार की बातों के लिए (1 यूहन्ना 2:15-17)। हमें सांसारिक चीज़ों से अधिक जुड़े नहीं रहना है। इससे हम स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाकर बच सकते हैं। जहाज के पायलट के लिए अपनी मंजिल का पता होना और अपेक्षित बंदरगाह की और जहाज को मोड़ना आवश्यक है। कई दिलचस्प मोड़ उसे अपनी मंजिल तक जाने के लिए रोकने के लिए उसे अपनी मंजिल की ओर खींच सकते हैं पर उसके लिए अपने सफ़र को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए जहाज़ को रास्ते पर रखना आवश्यक है।

हमें स्वर्गीय क्षेत्र की बातों की खोज करते रहना आवश्यक है। मसीही लोगों के रूप में हमारा लक्ष्य ऊंचा है कि हम जब तक जीवित हैं, तब तक कोशिश करते रह सकते हैं और इसके बावजूद मसीह समान हर गुण हो सकता है कि हमारे अन्दर न हो। मसीही जीवन की सुन्दरता यह है कि यह हर प्रकार से यीशु के जैसे बनते रहने की चुनौती लगातार देता है।

मसीही लोग मसीह की सिद्धता तक कभी पूरी तरह से नहीं पहुंचते; सिद्धता तक कभी नहीं पहुंचा जाता, परन्तु यीशु के चेलों का लक्ष्य यही होना चाहिए। ऊंची छलांग लगाने वाला अपने तय चिह्न से ऊपर छलांग लगाने के प्रयास में छड़ी को ऊंचा कर देता है, इसी प्रकार पौलुस ने मसीह के लिए बेहतर बनने की कोशिश की (फिलिप्पियों 3:12-14)।

मसीही लोगों के लिए नमूना यीशु है (1 कुरिन्थियों 11:1; 1 यूहन्ना 2:6)। चित्र बनाते समय कलाकार आम तौर पर पूरी तस्वीर बनाने की कोशिश करता है। इसके लिए जिस चित्र को वह बना रहा होता उसे बार-बार देखते रहना और हू-ब-हू वैसा बनाने के लिए ध्यान से काम करना, प्रयास करते रहना आवश्यक है। मसीही लोगों के लिए यीशु के आत्मिक गुणों को पहनने के लिए यही आवश्यक है (इफिसियों 4:13)।

मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ जीवन (3:3)

पौलुस ने रोम के मसीही लोगों को बताया कि उन्हें मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा दिया गया था, जो कि पाप के लिए उनकी अपनी आत्मिक मृत्यु को दर्शाता था, जिससे उन्हें पाप से मुक्त होकर एक नया जीवन मिला था (रोमियों 6:3, 4, 17, 18)। बपतिस्मे के समय पुराना जीवन खत्म हो गया था और मसीह के लिए नये जीवन का आरम्भ हो गया था (आयत 3)। एक

व्यक्ति की कल्पना करें, जो कभी नहाया नहीं है और फिर उसकी प्रासंगिकता बनाएं: केवल एक आत्मिक नहाने से उसकी सारी मैल, या पाप जो उसने पीछे किया हो धुल सकता है।

मसीही लोगों का आश्रय परमेश्वर के साथ मसीह में सहारा है। यदि हम इसमें आश्रय लेते हैं तो संसार हमें ढूंढ़ नहीं सकता या हमें अपने बुरे कामों में नहीं फंसा सकता। हम जब तक मसीह के साथ परमेश्वर में बने रहते हैं तब तक इसके प्रलोभक ढंगों से छिपे रहते हैं (आयत 3)।

मसीह के वापस आने पर हमारा महिमा पाना (3:4)

वर्तमान संसार मसीही लोगों को महिमा पाने की स्थिति में नहीं देखता, क्योंकि हमें वह महिमा मिली नहीं है जो भविष्य में मिलने वाली है। हम इस अर्थ में संसार से छिपे हुए हैं कि यह परमेश्वर के पुत्रों को पहचानता नहीं है (1 यूहन्ना 3:1)। मसीह जब हमें महिमा में लेने के लिए वापस आएगा तो हम छिपे नहीं होंगे बल्कि हमें उसकी समानता के साथ उसके साथ प्रकट किया जाएगा (आयत 4; फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2)।

मसीही लोगों के लिए अन्तिम लक्ष्य उस महिमा को पाना है जब यह नाशवान, अस्थाई संसार खत्म हो जाएगा (2 कुरिन्थियों 4:18)। हमारे सभी संघर्षों और परीक्षाओं का मोल तब पड़ेगा जब हमें "बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा" मिलेगी (2 कुरिन्थियों 4:17)।

टिप्पणियां

[1]रोमियों 12:1; 1 कुरिन्थियों 15:58; 2 कुरिन्थियों 5:17; गलातियों 5:1; इफिसियों 4:1; फिलिप्पियों 4:1 भी देखें। [2]जे. बी. लाइटफुट, *सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* संशो. (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1916), 207. [3]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर्स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर टू कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हैल्पस फ़ॉर ट्रांसलेटर्स (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी, 1977), 74. [4]देखें प्रेरितों 2:34; 5:31; 7:55; रोमियों 8:34; इफिसियों 1:20; इब्रानियों 1:3; 8:1; 10:12; 12:2; 1 पतरस 3:21, 22. [5]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 1065. [6]देखें मत्ती 10:30; मरकुस 8:17; लूका 6:22, 38; यूहन्ना 14:1; याकूब 4:14. [7]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 141. [8]देखें यूहन्ना 11:25; 14:6; 20:31; 2 कुरिन्थियों 4:10–12; 2 तीमुथियुस 1:1. [9]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एंड फिलिप वाई. पैंडलटन, *कमैंट्री ऑन थिस्सलोनियंस, कोरिन्थियंस, गलेशियंस एंड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग फाउंडेशन, तिथि नहीं), 20. [10]मत्ती 25:31, 32; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11, 12 भी देखें। [11]मत्ती 25:31–46; यूहन्ना 5:22; प्रेरितों 10:42; 17:31; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1.